दरकार

आज दौर सामने जो खड़ा है ।
गलत बयानबाजियों ने जोर पकड़ा है ।।
दर्द की बयार है,खुदा भी गवाह है ।
घायल मैं भी, दिल में भरी आह है ।।
आज अपनों की आंखों मे परायापन है ।
दौर है कातिल,सब ओर सूनापन है ।।
गुजर रहा जिस बुरे दौर से ।
शूलो का सफर सींच रहा अश्रु से ।।
दगाबाजी से मुकदर कांपने लगा है ।
खण्डित आज का आदमी बेवफा हो गया है
जानता है हर शख्स कुछ नही ले जाने को ।
सम्भाल बैठा है,अभिान के खजाने को ।।
नफरत जवां,लकीरो पर हो रही तकरारे ।
दर्द का बढता दरिया,नित बढ रही रारे ।।
शराफत की चादर में ढंका घायल घराने में ।
बढ रहा खौफ,भरे जहां के विराने में ।।
थक रहा कर कर जमाने से गुजारिस यारो ।
जग उठो, ढहाने बांटने वाली हर दीवरें ।।
बैर में खैर नही,मोहब्बत की दरकारे ।
मिला लो हाथ भारती ना सगुन लाई है रारे।।
नन्दलाल भारती